MODEL PAPER – 3

समय : 3 घंटा 15 मिनट] **[पूर्णांक : 100**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

1. परीक्षार्थी OMR उत्तर-पत्रक पर अपना प्रश्न पुस्तिका क्रमांक (10 अंकों का) अवश्य लिखें।
2. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
3. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
4. इस प्रश्न पत्र को धयानपूर्वक पढ़ने के लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया गया है।
5. यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में है, खण्ड-अ एवं खण्ड-ब।
6. **खण्ड-अ** में 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जिनमें से किन्हीं 50 प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। 50 से अधिक प्रश्नों के उत्तर देने पर प्रथम 50 प्रश्नों का ही मूल्यांकन किया जायगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित है। इनका उत्तर उपलब्ध कराये गये OMR उत्तर-पत्रक में दिये गये सही विकल्प को नीले/काले बॉल पेन से प्रगाढ़ करें। किसी भी प्रकार के व्हाइटनर/तरल पदार्थ/ब्लेड/नाखून आदि का OMR उत्तर-पत्रक में प्रयोग करना मना है, अन्यथा परीक्षा परिणाम अमान्य होगा।
7. **खण्ड-ब** में कुल 6 विषयनिष्ठ प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के समक्ष अंक निर्धारित हैं।
8. किसी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है।

खण्ड 'अ' : वस्तुनिष्ठ प्रश्न

❑ प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिए गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गये सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। **50 × 1 = 50**

1. 'सिपाही की माँ' शीर्षक पाठ का साहित्यिक विधा क्या है ?
(A) लेख (B) कहानी (C) एकांकी (D) निबंध

2. 'सौ' शब्द का तत्सम रूप क्या है ?
(A) कोटि (B) लक्ष (C) पद्म (D) शत

3. 'हितैषी' शब्द का संधि-विच्छेद है :
(A) हिते + षी (B) हितै + षी
(C) हित + ऐषी (D) हित + ऐैषी

4. मलयज की कौन-सी रचना है ?
(A) तिरिछ (B) जूठन
(C) सिपाही की माँ (D) हँसते हुए मेरा अकेलापन

5. निम्नलिखित में कौन कवि सगुण भक्तिधारा के हैं ?
(A) जायसी (B) कबीरदास
(C) सूरदास (D) कुतुबन

6. 'छप्पय' क्या है ?
(A) अलंकार (B) रस (C) छंद (D) संधि

7. 'पाठक' शब्द क्या है ?
(A) पुलिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

8. 'भारतीय' शब्द में कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक
(C) भाववाचक (D) समूहवाचक

9. कौन-सी रचना मलयज की है?
(A) एक चादर मैली सी (B) भीनी-भीनी बीनी चदरिया
(C) कविता से साक्षात्कार (D) मौत मुस्कुराई

10. कहानीकार तिरिछ की लाश को जलाने जंगल में किसके साथ गया था?
(A) शानू (B) भानु (C) थानू (D) कृशानु

11. जे॰ कृष्णमूर्ति का पूरा नाम था—
(A) जयंत कृष्णमूर्ति (B) जिड्डू कृष्णमूर्ति
(C) जीवंत कृष्णमूर्ति (D) जनेश कृष्णमूर्ति

12. मलिक मुहम्मद जायसी किस परंपरा के कवि है?
(A) सगुण कृष्णमूर्ति परंपरा (B) सगुण रामभक्ति परंपरा
(C) प्रेमाख्यानक काव्य-परंपरा (D) संस्कृत काव्य-परंपरा

13. सूरदास किस मार्ग में दीक्षित हुए?
(A) अष्टछाप (B) संतमार्ग
(C) पुष्टिमार्ग (D) इनमें से कोई नहीं

14. तुलसीदास के शिक्षा गुरु थे—
(A) नरहरिदास (B) रविदास
(C) शेष सनातन (D) मधुसूदन सरस्वती

15. सबके हित का वचन कौन कहता है? (पाठ के अनुसार)
(A) सूर (B) कबीर
(C) जायसी (D) विद्यापति

16. 'छत्रसाल दशक' में छंद है—
(A) एक सौ दस (B) दो सौ दस
(C) तीन सौ दस (D) दस

17. इनमें से कौन-सी पुस्तक प्रसादजी की नहीं है?
(A) आँसू (B) इंद्रजाल
(C) आँधी (D) शिवाजी का महत्त्व

18. सुभद्रा कुमारी चौहान के पिता का नाम क्या था?
(A) ठाकुर राजनाथ सिंह (B) ठाकुर हरिनाथ सिंह
(C) ठाकुर रामनाथ सिंह (D) ठाकुर जगमोहन सिंह

19. कौन-सी कृति शमशेर बहादुर सिंह की है?
(A) गुलामी का नशा (B) मुकुल
(C) काल तुझसे होड़ है मेरी (D) विशाख

20. गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म कब हुआ था?
(A) 13 नवंबर, 1917 ई॰ को (B) 11 सितंबर, 1918 ई॰ को
(C) 22 अक्टूबर, 1917 ई॰ को (D) 15 दिसम्बर, 1920 ई॰ को

21. गणेश किस संधि का उदाहरण है?
(A) विसर्ग सन्धि (B) गुण सन्धि
(C) वृद्धि सन्धि (D) दीर्घ सन्धि

22. इत्यादि का संधि-विच्छेद करें?
(A) इत् + आदि (B) इति + यादि
(C) इत् + आदि (D) इति + आदि

23. पर्यावरण किस संधि का उदाहरण है?
(A) व्यंजन संधि (B) यण संधि
(C) दीर्घ संधि (D) वृद्धि संधि

24. मनोरंजन किस संधि का उदाहरण है?
(A) दीर्घ संधि (B) गुण संधि
(C) यण संधि (D) विसर्ग संधि

25. 'चौराहा' में समास है?
(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष (C) द्वन्द्व (D) द्विगु

26. 'रात-दिन' शब्द किस समास का उदाहरण है?
(A) बहुव्रीहि (B) द्वन्द्व (C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

27. 'रसगुल्ला' में कौन-सा समास है?
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि (C) अव्ययीभाव (D) द्विगु

28. नौकर का विलोम है?
(A) अधिकारी (B) चपरासी (C) पूजारी (D) भीखारी

29. अनन्त का विलोम है?
(A) सीमित (B) असीमित (C) अन्त (D) प्रारम्भ

30. घबराहट में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) आहट (B) आवट (C) हट (D) त

31. किस शब्द में 'आवा' प्रत्यय नहीं है?
(A) दिखावा (B) चढ़ावा (C) लावा (D) भुलावा

32. कृदन्त प्रत्यय किन शब्दों के साथ जुड़ते है?
(A) संज्ञा (B) सर्वनाम (C) विशेषण (D) क्रिया

33. पवन का पर्यायवाची नहीं है?
(A) अनल (B) अनिल (C) समीर (D) मारुत

34. 'उल्टी गंगा बहाना' मुहावरा का क्या अर्थ होगा?
(A) परम्पराओं के विपरीत कार्य करना
(B) अपनी बात से स्वयं को ही नुकसान पहुँचाना
(C) निश्चिम चाल के विपरीत कार्य करना
(D) बिना सोचे-विचारे कार्य करना

35. 'आँखे दिखाना' मुहावरे का सही प्रयोग हुआ है?
(A) सीता ने डॉक्टर को आँख दिखाई
(B) श्यामू, साहूकार को आँख दिखता है
(C) वह दर्पण में आँख देखता है
(D) राम आँखों से देखता रहता है।

36. 'चार चाँद लगाना' का अर्थ है—
(A) चार चाँद दिखाई देना (B) सुन्दरता बढ़ जाना
(C) चार चांद की सुन्दरता (D) उजाले में वृद्धि होना

37. कमल का पर्यायवाची है?
(A) जलज (B) पीयूष (C) जलद (D) जलधि

38. उपसर्ग का प्रयोग होता है—
(A) शब्द के प्रारम्भ में (B) शब्द के मध्य में
(C) शब्द के अन्त में (D) इनमें से कोई नहीं

39. प्रख्यात में कौन-सा उपसर्ग है?
(A) प्रख (B) त (C) आत (D) प्र

40. प्रतिकूल में कौन-सा उपसर्ग है?
(A) परि (B) प्रति (C) प्र (D) परा

41. 'ओ सदानीरा' निबंध किस पुस्तक से लिया गया है?
(A) बिखरते क्षण से (B) नीलकुसुम से
(C) बोलते क्षण से (D) हारे को हरिनाम से

42. 'कृष्ण' का विलोम है—
(A) काला (B) सफेद
(C) शुक्ल (D) उजला

43. 'स्तुति' का विलोम है—
(A) निन्दा (B) शिकायत (C) घृणा (D) द्वेष

44. 'यथार्थ के इस लेन-देन का नाम ही संसार है।' यह पंक्ति किसके द्वारा लिखी गयी है?
(A) भगत सिंह (B) मलयज
(C) नामवर सिंह (D) चंद्रधर शर्मा गुलेरी

45. जिसका जन्म पहले हुआ हो (बड़ा भाई), वह है—
(A) बड़ा (B) पूर्वज (C) अग्रज (D) अनुज

46. 'जिसके बिना काम न चल सके' के लिए एक शब्द है—
(A) अपरिहार्य (B) आवश्यक (C) जरूरी (D) अवरोधक

47. 'मुक्तिबोध' का जन्म स्थल कहाँ है?
(A) रामगढ़ (B) श्योपुर (C) वाराणसी (D) भोपाल

48. 'झंझट' शब्द का पर्यायवाची होगा—
(A) दुःख (B) परेशानी (C) बवाल (D) आसानी

49. 'डरावना' शब्द का पर्यायवाची होगा—
(A) भय (B) लुंठक (C) क्रोध (D) भयानक

50. पंचायती राज में क्या खो गया है?
(A) ईमान (B) धर्म
(C) पंच परमेश्वर (D) विश्व-बंधुत्व

51. 'नीलगाय' शब्द कौन समास है?
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय (C) द्वन्द्व (D) द्विगु

52. 'नवयुवक' शब्द कौन समास है?
(A) द्विगु (B) द्वन्द्व
(C) कर्मधारय (D) अव्ययभाव

53. 'रस्सी का टुकड़ा' के रचनाकार है—
(A) निर्मल वर्मा (B) गाइ-डि मोपासाँ
(C) अंतोन चेखव (D) इनमें से कोई नहीं

54. 'सेना' शब्द है—
(A) स्त्रीलिंग (B) पुल्लिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

55. 'कवि' शब्द का स्त्रीलिंग रूप है—
(A) कविति (B) कवियिति
(C) कवयित्री (D) कवयिती

56. कौन लेखक कांगो के शिक्षा मंत्री, वित्त मंत्री एवं प्रधानमंत्री रह चुके हैं?
(A) गाइ-डि भोपासाँ (B) अंतोन चेखव
(C) हेनरी लोपेज (D) इनमें से कोई नहीं

57. निम्न में शुद्ध शब्द है—
(A) प्रशंसा (B) परिक्षा (C) प्रनाम (D) प्रशाद

58. 'शत' शब्द है—
(A) तत्सम (B) तद्भव (C) देशज (D) विदेशज

59. 'क्लर्क की मौत' शीर्षक में क्लर्क का क्या नाम है?
(A) इवान द्मीत्रिच चेव्यकोव (B) होशेकम
(C) फँक्वा (D) ब्रोत

60. 'द' का उच्चारण स्थान क्या है?
(A) कंठ (B) दंत (C) मूर्द्धा (D) ओष्ठ

61. 'सुबह हुई इसलिए पक्षी चहक उठे' वाक्य है—
(A) सरल वाक्य (B) मिश्र वाक्य
(C) संयुक्त वाक्य (D) इनमें सभी

62. 'अकाल पड़ेगी और लोग मरेंगे' वाक्य है—
(A) सरल वाक्य (B) मिश्र वाक्य
(C) संयुक्त वाक्य (D) इनमें सभी

63. हिन्दी कहानी के विकास में 'मील का पत्थर' कौन-सी कहानी मानी जाती है?
(A) उसने कहा था (B) पंच परमेश्वर
(C) पुरस्कार (D) मंगर

64. निम्न में सार्वनामिक विशेषण है—
(A) ऐसा आदमी नहीं देखा (B) पीला
(C) बीस (D) दस लीटर

65. 'प्रेम' शब्द का विशेषण है—
(A) प्रेमी (B) प्रेममग्न (C) प्रेमरतन (D) प्रेमयोगी

66. 'रोज' शीर्षक कहानी में किसने पूछा ''तुम कुछ पढ़ती-लिखती नहीं?''
(A) लेखक ने (B) पति ने (C) भाई ने (D) चाचा ने
67. 'नकलची' शब्द में प्रत्यय है—
(A) न (B) नक (C) अची (D) ची
68. 'महिमा' शब्द में प्रत्यय है—
(A) मा (B) अमा (C) इमा (D) आ
69. 'एक लेख और एक पत्र' में भगत सिंह ने किसको पत्र लिखा था?
(A) सुखदेव (B) राजगुरु
(C) बिस्मिल (D) अशफाक खाँ
70. 'रात' शब्द है—
(A) तत्सम (B) तद्भव (C) देशज (D) विदेशज
71. 'अपना उल्लू सीधा करना' मुहावरे का अर्थ है—
(A) चापलूसी करना (B) अपना काम निकालना
(C) चालाकी करना (D) मुर्ख बनाना
72. 'जिसने गुरू से दीक्षा ली हो' एक शब्द में कहा जाता है—
(A) शिक्षित (B) दीक्षित (C) पंडित (D) आचार्य
73. 'उसने कहा था' कहानी के नायक है?
(A) लहना सिंह (B) बोधा सिंह
(C) वजीरा सिंह (D) हजारा सिंह
74. 'हाथ-पैर' कौन-सा समास है?
(A) द्वन्द्व (B) द्विगु
(C) तत्पुरूष (D) इनमें से कोई नहीं
75. 'तुलसीदास' किस काल के कवि है?
(A) भक्तिकाल (B) आदिकाल
(C) रीतिकाल (D) आधुनिक काल
76. 'संयोगिता स्वयंवर' रचना है—
(A) बालकृष्ण भट्ट की (B) प्रतापनारायण मिश्र की
(C) श्रीनिवास दास की (D) मैथिलीशरण गुप्त की
77. सूबेदार हजारा सिंह के लड़के का नाम था—
(A) बोधा सिंह (B) महा सिंह
(C) कीरत सिंह (D) जगधारी सिंह
78. किसने कहा था—''अभी न जाने कितने मीलों इस देश की जनता को जाना है''?
(A) महात्मा गाँधी (B) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद
(C) जवाहर लाल नेहरू (D) लालबहादुर शास्त्री
79. 'संस्कृति के चार अध्याय' किसकी कृति है?
(A) गुलाब दास (B) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(C) आचार्य सीताराम चतुर्वेदी (D) रामधारी सिंह 'दिनकर'
80. कौन-सी पुस्तक अज्ञेय की है?
(A) मिट्टी की ओर (B) मौत मुस्कुराई
(C) हरी घास पर क्षणभर (D) ओ सदानारी
81. 'प्रताप' के संस्थापक संपादक कौन थे?
(A) गणेश शंकर विद्यार्थी (B) माखनलाल चतुर्वेदी
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) भारतेंदु हरिश्चंद्र
82. गाँधीजी चंपारन में कब आए?
(A) अप्रैल 1918 ई० में (B) अप्रैल 1920 ई० में
(C) 20 जून 1917 ई० में (D) अप्रैल 1917 ई० में
83. 'सिपाही की माँ' एकांकी के अनुसार लड़ाई कहाँ हो रही है?
(A) लाहौर में (B) बर्मा में
(C) बंगाल में (D) जापान में
84. कौन-सी पुस्तक नामवर सिंह की नहीं है?
(A) बकलम खुद (B) इतिहास और आलोचना
(C) तिरिछ (D) दूसरी परंपरा की खोज
85. 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' के लेखक है—
(A) मुक्तिबोध (B) डॉ० नामवर सिंह
(C) ओमप्रकाश वाल्मीकि (D) डॉ० नगेन्द्र
86. 'शंख' शब्द है—
(A) देशज (B) विदेशज (C) तत्सम (D) तद्भव
87. ''सरैयामन ताल'' का जल कैसा है?
(A) चंचल (B) स्थिर (C) गहरा (D) गंदा
88. 'सिपाही की माँ' एकांकी की कथावस्तु है—
(A) निम्न मध्यम वर्ग की (B) उच्च वर्ग की
(C) उच्च मध्यम वर्ग की (D) निम्न वर्ग की
89. जायसी का जन्म स्थान है—
(A) दिल्ली (B) इलाहाबाद
(C) जायस, कब्र अमेठी (D) भागलपुर
90. 'आकाश पाताल एक करना' मुहावरे का अर्थ है—
(A) उत्पात करना (B) अत्याचार करना
(C) निरंतर अन्याय करना (D) कठिन परिश्रम करना
91. 'मुट्ठी में करना' मुहावरे का अर्थ है—
(A) भ्रम में रखना (B) मनमानी करना
(C) वश में करना (D) वश में न करना
92. 'राँभति गो खरिकनि में, बछरा हित पाई' यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है?
(A) उषा से (B) गाँव का घर से
(C) सूरदास के पद से (D) पुत्र-वियोग से
93. नाभादास जी किस धारा के संत थे?
(A) शैव दर्शन के (B) बौद्ध दर्शन के
(C) वैष्णव दर्शन के (D) जैन दर्शन के
94. 'छत्रसाल दशक' के कितने छंदों में महाराजा छत्रसाल की वीरता का यशोगान किया गया है?
(A) 50 छंदों में (B) 52 छंदों में
(C) 59 छंदों में (D) 10 छंदों में
95. 'इतने पास अपने' शीर्षक संकलन किस कवि के द्वारा लिखा गया है?
(A) विनोद कुमार शुक्ल (B) ज्ञानेंद्रपति
(C) अशोक वाजपेयी (D) शमशेर बहादुर सिंह
96. 'घुटने टेकना' मुहावरे का अर्थ है—
(A) हार मानना (B) योगा करना
(C) अभिवादन करना (D) लज्जित होना
97. तुलसीदास के दीक्षा गुरू थे—
(A) अग्रदास (B) नरहरिदास
(C) सूरदास (D) महादास
98. 'खारा' का विलोम है—
(A) चीनी (B) मधूर (C) मीठा (D) मिष्ठान
99. 'पंचवटी' कौन-सा समास है?
(A) कर्मधारय (B) द्वन्द्व
(C) द्विगु (D) इनमें से कोई नहीं
100. 'समाज' का विशेषण है—
(A) समाजिक (B) सामाजिक
(C) समाजयोग्य (D) असामाजिक

खण्ड-ब : विषयनिष्ठ प्रश्न

1. किसी एक पर निबंध लिखें— 1 × 8 = 8
(i) विज्ञान : वरदान या अभिशाप (ii) प्रदूषण
(iii) कम्प्यूटर (iv) मेरा प्रिय खेल
(v) देशभक्ति (vi) गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)
2. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या करें— 2 × 4 = 8
(क) व्यक्ति से नहीं हमें तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धान्तों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है।
(ख) सच है, जबतक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता।

(ग) इसी तरह
घर भर मिल कर
धीरे-धीरे सोच सोचकर
एक साथ ढूँढेंगे
कहाँ-कहाँ लोहा है–

(घ) आज दिशाएँ भी हँसती हैं
है उल्लास विश्व पर छाया
मेरा खोया हुआ खिलौना
अब तक मेरे पास न आया।

3. खेलों के लिए आवश्यक तैयारी और खेल का सामान उपलब्ध कराने के लिए प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र लिखिए। **5**

अथवा,

अपने क्षेत्र में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों का वर्णन करते हुए किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

4. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं पाँचों के उत्तर 50–70 शब्दों में दें। **2 × 5 = 10**

(i) शाहनी शेरे को क्या आशीर्वाद देती है?
(ii) बुद्ध को नारियों को बौद्ध धर्म में प्रवेश की अनुमति क्यों देनी पड़ी?
(iii) चातकी किसके लिए तरसती है ?
(iv) 'पद्मावत्' के रचनाकार कौन है?
(v) कवि रघुवीर सहाय का जन्म कहाँ हुआ था?
(vi) 'कल देखते नहीं यह रेशम का शाल।' यह सुनते ही लहना की क्या प्रतिक्रिया हुई ?
(vii) गंगा पर पुल बनाने में अंग्रेजों ने क्यों दिलचस्पी नहीं ली ?
(viii) मानक और सिपाही एक-दूसरे को क्यों मारना चाहते हैं ?
(ix) लहनासिंह के प्रेम के बारे में लिखें।
(x) अर्द्धनारीश्वर की कल्पना क्यों की गई होगी ? आज इसकी क्या सार्थकता है ?

5. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 150–250 शब्दों में दें। **3 × 5 = 15**

(i) 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी का सारांश लिखें।
(ii) 'रोज' शीर्षक कहानी का सारांश लिखें।
(iii) लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी एवं उनके द्वारा रचित कविता 'पुत्र वियोग' का भावार्थ लिखें।
(iv) कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की जीवनी एवं उनके द्वारा संकलित कविता 'जन-जन का चेहरा एक' का सारांश लिखें।
(v) भगत सिंह की विद्यार्थियों से क्या अपेक्षाएँ हैं ?
(vi) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काव्य आदर्श क्या थे? पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

6. निम्न में से किसी एक का संक्षेपण करें— **1 × 4 = 4**

(i) अंग्रेजी पढ़ना खराब नहीं है, पर अंग्रेजी पढ़कर अंग्रेज हो जाना खराब है। अंग्रेजी पढ़कर अपने देश को, अपनी भाषा को, अपनी संस्कृति को भूल जाना खराब है। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि आज के अधिकतर अंग्रेजी पढ़े-लिखे सज्जन अपने देश के प्रत्येक व्यक्ति को हीन-दृष्टि से देखते हैं। उसकी आलोचना करते हैं और उसे अपनाने में अपनी मानहानि समझते हैं। पर्व को ही लीजिए। पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि यह स्त्रियों का ढोंग है। यह पंडितों का पोंगा है। वे कहते हैं, पर्व बेकार हैं। ये फिजूलखर्ची के साधन हैं।

(ii) वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानवीय दृष्टि सम्पन्न राष्ट्रचेता नागरिक बनाने की जगह आत्मकेन्द्रित व्यक्तियों के निर्माण का कारखाना है। यही कारण है कि जो जितना पढ़ा-लिखा है, वही देश और समाज के विकास में बाधक है। इसे पढ़े-लिखे लोगों से अधिक मानवीय निरक्षर लोग हैं, जो गलत करने से पहले बार बार सोचते हैं। इसलिए शिक्षा के व्यवसायीकरण के साथ-साथ उसका मानवीयकरण अधिक आवश्यक है।

व्याख्यासहित उत्तर

खण्ड 'अ'

OMR ANSWER-SHEET

1.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	51.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
2.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	52.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
3.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	53.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
4.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	54.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
5.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	55.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
6.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	56.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
7.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	57.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
8.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	58.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
9.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	59.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
10.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	60.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
11.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	61.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
12.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	62.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
13.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	63.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
14.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	64.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
15.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	65.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
16.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	66.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
17.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	67.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
18.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	68.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
19.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	69.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
20.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	70.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
21.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	71.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
22.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	72.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
23.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	73.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
24.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	74.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
25.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	75.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
26.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	76.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
27.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	77.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
28.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	78.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
29.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	79.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
30.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	80.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
31.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	81.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
32.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	82.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
33.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	83.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
34.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	84.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
35.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	85.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
36.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	86.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
37.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	87.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
38.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	88.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
39.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	89.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
40.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	90.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
41.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	91.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
42.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	92.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
43.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	93.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
44.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	94.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
45.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	95.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
46.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	96.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
47.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	97.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
48.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	98.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
49.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	99.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
50.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	100.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ

ANSWER

1. (C)	2. (D)	3. (C)	4. (D)	5. (C)
6. (C)	7. (A)	8. (B)	9. (C)	10. (C)
11. (B)	12. (C)	13. (C)	14. (C)	15. (B)
16. (D)	17. (D)	18. (C)	19. (C)	20. (A)
21. (B)	22. (D)	23. (B)	24. (D)	25. (D)
26. (B)	27. (A)	28. (A)	29. (A)	30. (A)
31. (C)	32. (D)	33. (A)	34. (A)	35. (B)
36. (B)	37. (A)	38. (A)	39. (D)	40. (B)
41. (C)	42. (C)	43. (A)	44. (B)	45. (C)
46. (A)	47. (B)	48. (C)	49. (D)	50. (C)
51. (B)	52. (C)	53. (B)	54. (A)	55. (C)
56. (C)	57. (A)	58. (A)	59. (A)	60. (B)
61. (B)	62. (C)	63. (A)	64. (A)	65. (A)
66. (A)	67. (D)	68. (C)	69. (A)	70. (B)
71. (B)	72. (B)	73. (A)	74. (A)	75. (A)
76. (C)	77. (A)	78. (C)	79. (D)	80. (C)
81. (A)	82. (D)	83. (B)	84. (C)	85. (C)
86. (C)	87. (B)	88. (A)	89. (C)	90. (D)
91. (C)	92. (C)	93. (C)	94. (D)	95. (D)
96. (A)	97. (B)	98. (C)	99. (C)	100. (B)

खण्ड – ब

1. (i) विज्ञान : वरदान या अभिशाप

विज्ञान के दो रूप-विज्ञान एक शक्ति है, और नित नए आविष्कार करती है। यह शक्ति न तो अच्छी है, न बुरी। वह तो केवल शक्ति है। अगर हम उस शक्ति से मानव-कल्याण के कार्य करें तो वह 'वरदान' प्रतीत होती है। अगर उसी से विनाश करना शुरू कर दें तो वह 'अभिशाप' बन जाती है।

विज्ञान वरदान के रूप में—विज्ञान ने अन्धों को आँखें दी हैं, बहरों को सुनने की ताकत। लाइलाज रोगों की रोकथाम की है तथा अकाल मृत्यु पर विजय पाई है। विज्ञान की सहायता से यह युग बटन-युग बन गया है। बटन दबाते ही वायु-देवता हमारी सेवा करने लगते हैं, इन्द्र-देवता वर्षा करने लगते हैं, कहीं प्रकाश जगमगाने लगता है तो कहीं शीत-ऊष्ण वायु के झोंको सुख पहुँचाने लगते हैं। बस, गाड़ी, वायुयान आदि ने स्थान की दूरी को बाँध दिया है। टेलीफोन द्वारा तो हम सारी वसुधा से बातचीत करके उसे वास्तव में कुटुम्ब बना लेते हैं। हमने समुद्र की गहराइयाँ भी नाप डाली हैं और आकाश की ऊँचाइयाँ भी। हमारे टी॰वी॰, रेडियो, वीडिया में मनोरंजन के सभी साधन कैद हैं। सचमुच विज्ञान 'वरदान' ही तो है।

विज्ञान अभिशाप के रूप में—मनुष्य ने जहाँ विज्ञान से सुख का साधन जुटाए हैं, वहाँ दुःख के अम्बार भी खड़े कर लिए हैं। विज्ञान के द्वारा हमने अणु बम, परमाणु बम तथा अन्य ध्वंसकारी शस्त्र-अस्त्रों का निर्माण कर लिया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि अब दुनिया में इतनी विनाशकारी सामग्री इकट्ठी हो चुकी है कि उससे सारी पृथ्वी को अनेक बार नष्ट किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त प्रदूषण की समस्या बहुत बुरी तरह फैल गई है। नित्य नए असाध्य रोग पैदा होते जा रहे हैं, जो वैज्ञानिक साधनों के अन्धाधुन्ध प्रयोग करने के दुष्परिणाम हैं।

वैज्ञानिक प्रगति का सबसे बड़ा दुष्परिणाम मानव-मन पर हुआ है। पहले जो मानव निष्कपट था, निःस्वार्थ था, भोला था, मस्त और बेपरवाह था, वह अब छली, स्वार्थी, चालाक, भौतिकवादी तथा तनावग्रस्त हो गया है। उसके जीवन में से संगीत गायब हो गया है, धन की प्यास जाग गई है। नैतिक मूल्य नष्ट हो गए हैं।

निष्कर्ष—वास्तव में विज्ञान को वरदान या अभिशाप बनाने वाला मनुष्य है। जैसे अग्नि से हम रसोई भी बना सकते हैं और किसी का घर भी जला सकते है, जैसे चाकू से हम फलों का स्वाद भी ले सकते हैं और किसी की हत्या भी कर सकते हैं, उसी प्रकार विज्ञान से हम सुख के साधन भी जुटा सकते हैं और मानव का विनाश भी कर सकते हैं। अतः विज्ञान को वरदान या अभिशाप बनाना मानव के हाथ में है। इस सन्दर्भ में एक उक्ति याद रखनी चाहिए—'विज्ञान अच्छा सेवक है लेकिन बुरा हथियार।'

(ii) प्रदूषण

प्रदूषण का अभिप्राय—विज्ञान के इस युग में मानव को जहाँ कुछ वरदान मिले हैं, वहाँ कुछ अभिशाप भी मिले हैं। प्रदूषण भी एक ऐसा अभिशाप है जो विज्ञान की कोख में से जन्मा है और जिसे सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर है।

प्रदूषण के प्रकार—प्राकृतिक सन्तुलन में दोष पैदा होना, न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाद्य मिलना, न शान्त वातावरण मिलना, प्रदूषण है। प्रदूषण कई प्रकार का होता है। प्रमुख प्रदूषण हैं—वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण और ध्वनि-प्रदूषण।

महानगरों में यह प्रदूषण अधिक फैला हुआ है। वहाँ चौबीसों घंटे कल-कारखानों का धुआँ, मोटर-वाहनों का काला धुँआ इस तरह फैल गया है कि स्वस्थ वायु में साँस लेना दुर्लभ हो गया है। मुम्बई की महिलाएँ धोए हुए वस्त्र छत से उतारने जाती हैं तो उन पर काले-काले कण जमे हुए पाती हैं। ये कण साँस के साथ मनुष्य के फेफड़ों में चले जाते हैं और असाध्य रोगों को जन्म देते हैं। यह समस्या वहाँ अधिक होती है जहाँ सघन आबादी होती है, वृक्षों का अभाव होता है और वातावरण तंग होता है।

कल-कारखानों का दूषित जल नदी-नालों में मिलकर भयंकर जल-प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय तो कारखानों का दुर्गन्धित जल सब नदी-नालों में घुल-मिल जाता है। इससे अनेक बीमारियाँ पैदा होती हैं।

मनुष्य को रहने के लिए शांत वातावरण चाहिए। परन्तु आजकल कल-कारखानों का शोर, यातायात का शोर, मोटर-गाड़ियों की चिल्ल-पों, लाउडस्पीकरों की कर्ण भेदक ध्वनि ने बहरेपन और तनाव को जन्म दिया है।

उपर्युक्त प्रदूषणों के कारण मानव के स्वस्थ जीवन को खतरा पैदा हो गया है। खुली हवा में लम्बी साँस लेने तक को तरस गया है आदमी। गन्दे जल के कारण कई बीमारियाँ फसलों में चली जाती हैं जो मनुष्य के शरीर में पहुँचकर घातक बीमारियाँ पैदा करती हैं। भोपाल गैस कारखाने से रिसी गैस के कारण हजारों लोग मर गए, कितने ही अपंग हो गए। पर्यावरण-प्रदूषण के कारण न समय पर वर्षा आती है, न सर्दी-गर्मी का चक्र ठीक चलता है। सूखा, बाढ़, ओला आदि प्राकृतिक प्रकोपों का कारण भी प्रदूषण है।

प्रदूषण को बढ़ाने में कल-कारखाने, वैज्ञानिक साधनों का अधिकाधिक उपयोग, फ्रिज, कूलर, वातानुकुलन, ऊर्जा संयंत्र आदि दोषी हैं। प्राकृतिक संतुलन का बिगड़ना भी मुख्य कारण है। वृक्षों को अन्धाधुन्ध काटने से मौसम का चक्र बिगड़ा है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में हरियाली न होने से भी प्रदूषण बढ़ा है।

विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से बचने के लिए हमें चाहिए कि अधिकाधिक वृक्ष लगाए जाएँ, हरियाली की मात्रा अधिक हो। सड़कों के किनारे घने वृक्ष हों। आबादी वाले क्षेत्र खुले हों, हवादार हों, हरियाली से ओतप्रोत हों। कल-कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए और उनसे निकले प्रदूषित मल को नष्ट करने के उपाय सोचने चाहिए।

इन तमाम, विचारणीय और महत्वपूर्ण तथ्यों से निष्कर्ष निकलता है कि प्रदूषण की समस्या मानव निर्मित है। जहाँ एक ओर मनुष्य की लापरवाही एवं जानबूझकर प्रदूषित करने की गलत आदतें हैं, वहीं विज्ञान का दुरुपयोग भी एक अन्य कारण है। कारखानों तथा नालों का मल और कचरा, चिमनी से निकलने वाला धुँआ, मोटर गाड़ियों का कार्बन पर्यावरण को प्रदूषित करता है। साथ ही, वृक्षों की कटाई वायु को दूषित करती हैं। अतः हमें इनसे बचना होगा। कचरों, गन्दे-जल का समुचित रख-रखाव होना चाहिए।

(iii) कम्प्यूटर

वर्तमान युग कम्प्यूटर-युग है। यदि भारतवर्ष पर नजर दौड़ाकर देखें तो हम पाएँगे कि आज जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रवेश हो गया है। बैंक, रेलवे-स्टेशन, हवाई-अड्डे, डाकखाने, बड़े-बड़े उद्योग, कारखाने, व्यवसाय, हिसाब-किताब, रूपये गिनने की मशीनें तक कम्प्यूटरीकृत हो गई हैं। अब भी वह कम्प्यूटर का प्रारंभिक प्रयोग है। आनेवाला समय इसके विस्तृत फैलाव का संकेत दे रहा है।

आधुनिक उपकरण कम्प्यूटर—इस 'पागल गति' को सुव्यवस्था देने की समस्या आज की प्रमुख समस्या है। कहते हैं, आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इस आवश्यकता ने अपने अनुसार निदान ढूँढ लिया है। कम्प्यूटर एक ऐसी स्वचालित प्रणाली है, जो कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सकता

है। हड़बड़ी में होने वाली मानवीय भूलों के लिए कम्प्यूटर रामबाण-औषधि है। क्रिकेट के मैदान में अम्पायर की निर्णायक-भूमिका हो, या लाखों अरबों की लम्बी-लम्बी गणनाएँ, कम्प्यूटर पलक झपकते ही आपकी समस्या हल कर सकता है। पहले इन कामों को करनेवाले कर्मचारी हड़बड़ाकर काम करते थे; एक भूल से घबड़ाकर और अधिक गड़बड़ी करते थे। परिणामस्वरूप काम कम, तनाव अधिक होता था। अब कम्प्यूटर की सहायता से काफी सुविधा हो गई है।

निर्दोष गणक—कम्प्यूटर ने फाइलों की आवश्यकता कम कर दी है। कार्यालय की सारी गतिविधियाँ फ्लॉपी में बन्द हो जाती है, इसलिए फाइलों के स्टोरों की जरूरत अब नहीं रही। अब समाचार-पत्र भी इन्टरनेट के माध्यम से पढ़ने की व्यवस्था को गई है। विश्व के किसी कोने में छपी पुस्तक, फिल्म, घटना की जानकारी इंटनरेट पर ही उपलब्ध है। एक समय था, जब कहते थे कि विज्ञान ने संसार को कुटुम्ब बना दिया है। कम्प्यूटर ने तो मानो उस कुटुम्ब को आपके कमरे में उपलब्ध करा दिया है। संभव है, कम्प्यूटर की सहायता से आप मनचाहे सवाल का जवाब दूरदर्शन या इंटरनेट से ले पाएँ। शारीरिक रूप से न सही, काल्पनिक रूप से जिस मौसम का, जिस प्रदेश का आनन्द उठाना चाहें, उठा सकें।

संचार-व्यवस्था—आज टेलिफोन, रेल, फ्रिज, वाशिंग मशीन आदि उपकरणों के बिना नागरिक जीवन जीना कठिन हो गया है। इन सबके निर्माण या क्रियान्वयन में कम्प्यूटर का योगदान महत्वपूर्ण है। रक्षा-उपकरणों, हजारों मील की दूरी पर सटीक निशाना बाँधने, सूक्ष्म-से-सूक्ष्म वस्तुओं को खोजने में कम्प्यूटर का अपना महत्व है।

आज कम्प्यूटर ने मानव-जीवन की सुविधा, सरलता, सुव्यवस्था और सटीकता प्रदान की है। अत: इसका महत्व बहुत अधिक है।

(iv) मेरा प्रिय खेल

क्रिकेट का खेल संसार में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित है। यह इतना लोकप्रिय है कि हर स्थिति और उम्र के लोग इसके बारे में जानते हैं। वे उत्सुकता से क्रिकेट मैच की प्रतीक्षा करते हैं। फाइनल मैच के दिन बाजार की अधिकांश दुकानें बंद रहती हैं। कार्यालय के कर्मचारी अपने टेलीविजन-सेट पर मैच देखने के लिए आकस्मिक अवकाश का आवेदन-पत्र दे देते हैं। क्रिकेट का टेस्ट मैच पाँच दिनों तक खेला जाता है। एकदिवसीय मैच सिर्फ एक दिन में समाप्त हो जाता है।

मैंने हाल में टेलीविजन पर एक क्रिकेट टेस्ट मैच देखा जो कलकत्ता में भारत और इंगलैण्ड के बीच खेला गया था। ईडन गार्डन का वह मैदान जहाँ मैच खेला गया, पूरी तरह भरा हुआ था। मैच सुबह 9.50 पर शुरू हुआ। भारत के कप्तान विराट कोहली तथा इंगलैण्ड के कप्तान बेन स्टोक्स थे।

मैच इंगलैण्ड की बैटिंग से शुरू हुआ। इंगलैण्ड का शुरूआती बल्लेबाज काफी मजबूत था। लेकिन विकेट गिरते रहे और इंगलैण्ड का टीम एक छोटे से योग पर ही पहली पारी में आउट हो गयी। भारतीय खिलाड़ी अच्छा खेले। उन्होंने बैटिंग भी अच्छी की और एक अच्छे योग तक अपनी रन संख्या को पहुँचाया।

खेल के चौथे दिन इंगलैण्ड की टीम दुबारा बल्लेबाजी (बैटिंग) करने मैदान में उतरी। लेकिन वे बुमराह तथा अन्य गेंदबाजों के स्पिन आक्रमण के सामने अधिक रन नहीं बना सके। अंतिम दिन भारत ने फिर से बल्लेबाजी (बैटिंग) की। उसे मैच जीतने के लिए 225 रन बनाने थे। हमारे खिलाड़ियों ने अच्छी शुरूआत की। पर उनमें से कुछ मैदान में ज्यादा देर तक नहीं ठहर सके। मैच बराबरी की तरफ बढ़ रहा था। तीसरे पहर तक मैच में कोई दिलचस्पी नहीं रही थी।

लेकिन ईडन-गार्डन, कलकत्ता का यह मैच अभी अपने रोमांचक उतार-चढ़ाव के कारण मेरी स्मृति में सजीव है।

(v) देशभक्ति

देशभक्ति राष्ट्र के कल्याण के लिए मरने और जीने का नाम है। एक देशभक्त अपने देश का सच्चा प्रेमी होता है। राष्ट्र और उसके निवासियों का कल्याण करना एक देशभक्त का सबसे बड़ा कर्तव्य होता है। हर देश ने ऐसे राष्ट्रभक्तों को उत्पन्न किया है। देश की स्वतंत्रता और उसका विकास ऐसे लोगों पर ही आधारित है। देश का चहुँमुखी विकास उसमें निवास करने वाले राष्ट्रभक्तों की संख्या पर निर्भर है। हम सभी अपनी मातृभूमि के ऋणी हैं। हमने यहाँ जन्म लिया है और इसकी मिट्टी पर बड़े हुए हैं। इसलिए हम सभी अपने देश की स्वतंत्रता और विकास के लिए उत्तरदायी हैं। अगर हम ईमानदार होंगे तो हमारा देश धनी और सम्पन्न होगा। हमारे जीवन का प्रमुख दायित्व अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदारी तथा अधिकारों का बलिदान होना चाहिए। यह देशभक्ति का पहला कदम है।

एक सच्चा देशभक्त प्राथमिक जिम्मेदारी से कुछ अधिक ही करता है, वह अपने जीवन और संपत्ति के बारे में कभी भी चिन्ता नहीं करता। वह अपना जीवन और सबकुछ अपने देश के लिए न्योछावर करने को सदा तैयार रहता है। उसका जीवन उसके अपने हित और अपने परिवार तक ही सीमित नहीं रहता। वह अपने देश और देशवासियों की सदैव चिन्ता करता है। राष्ट्रीय हित उसके निजी हित से बढ़कर है। राजनीतिक दलों और शासकों के मन में भी देशभक्ति की भावना रहनी चाहिए। अगर वे राष्ट्रहित की बात सोचेंगे तो देश का विकास कल्पना से परे होगा।

आजकल विशेषतया भारत में बहुत कम लोग ही सच्चे राष्ट्रभक्त रह गये हैं। राजनीतिज्ञ और शासक सभी पहले अपने ही कल्याण के बारे में सोचते हैं। वे अपनी ही जेब भरने की फिराक में रहते हैं। देश के लिए यदि वे कुछ करते भी हैं, तो उनका उद्देश्य एक निश्चित लक्ष्य, चुनाव में मत प्राप्त करने तक, सीमित रहता है। उन्हें देश से न तो प्यार है और न ही उसके लिए दिल में कोई दर्द है। वे नकली देशभक्त हैं। वे स्वार्थी हैं। उनमें नैतिकता और बलिदान की उच्च भावना (संवेदना) नहीं है।

एक सच्चे देशभक्त की उसके देशवासी इज्जत करते हैं। यहाँ तक कि उसकी पूजा भी करते हैं। उसकी भावना सिर्फ अपने देश तक ही नहीं सीमित रहती, बल्कि सारे विश्व तक उसका प्रसार होता है। वह मानव जाति के हित की बात सोचता है। इस दृष्टि से देखा जाय तो महात्मा गाँधी आदर्श देशभक्त थे। वे सिर्फ भारत के लिए ही नहीं मानव मात्र के आदर्श थे। सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह ऐसे देशभक्त थे जिन्होंने देश के ऊपर खुशी-खुशी अपने प्राण न्योछावर कर दिए। हमारे पूर्वजों में—महाराणा प्रताप, शिवाजी, रानी लक्ष्मीबाई, वीर कुँवर सिंह और अन्य कई नाम हैं। एक देशभक्त मृत्यु के समक्ष भी साहसी और निर्भीक रहता है।

राष्ट्र और विश्व का भविष्य राष्ट्रभक्तों पर निर्भर रहता है। अगर किसी देश में राष्ट्रभक्तों की संख्या में वृद्धि होती है तो वह देश विश्व में विशिष्ट सम्मान प्राप्त करता है। एक सच्चा राष्ट्रभक्त सिर्फ अपने और देशवासियों के बारे में ही नहीं सोचता, वह मानव जाति और संपूर्ण विश्व के बारे में विचार करता है। महात्मा गाँधी ने ठीक ही कहा है—''मेरी राष्ट्रभक्ति में सारी मानव जाति की भलाई सम्मिलित है।''

(vi) गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)

26 जनवरी, 1950 को अपने देश को गणतंत्र घोषित किया गया। हमलोगों का अपना संविधान इसी दिन क्रियान्वित किया गया। इसलिए, हमलोगों की वास्तविक आजादी 26 जनवरी, 1950 को शुरू हुई। इस दिन प्रत्येक वर्ष सभी विद्यालय, महाविद्यालय और कार्यालय बन्द रहते हैं तथा अपने देश के लोग खुशीपूर्वक गणतंत्र दिवस मनाते हैं।

इस दिन हमलोग तिरंगा झंडा फहराते हैं। आकाश तिरंगे झंडों से भर जाता है। सभी कार्यालयों के प्रधान झंडा फहराते हैं। झंडोत्तोलन समारोह के बाद सभी संस्थाओं में मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं और विभिन्न तरह के कार्यक्रम सम्पन्न किये जाते हैं। इस दिन विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के छात्रों के बीच पुरस्कार वितरण किए जाते हैं।

26 जनवरी को विद्यार्थी सात बजे सुबह में अपने विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में पहुँच जाते हैं। वे मैदान को कागज की झंडी तथा रंगीन मिट्टी से सजाते हैं। प्राचार्य झंडा फहराते हैं। इस अवसर पर राष्ट्रीय गान गाया जाता है। झंडा फहराने के बाद प्राचार्य छात्रों को सम्बोधित करते हैं तथा उनसे देश की उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करने के लिए कहते हैं। इस दिन हमलोग वर्णन करते हैं कि कैसे देश स्वतंत्र हुआ। हमलोग राष्ट्र के लोगों के कर्तव्यों के बारे में भी बतलाते हैं।

इस प्रकार, 26 जनवरी एक राष्ट्रीय पर्व है। यह हमारे देश के इतिहास

में बहुत महत्वपूर्ण दिन है। इस दिन हमलोग देश के अच्छे नागरिक होने का वादा करते हैं। इस दिन हमलोग देश की भलाई के लिए कुछ करने की कसम लेते हैं।

2. (क) व्याख्या—प्रस्तुत वाक्य जयप्रकाश नारायण के भाषण 'सम्पूर्ण क्रांति' से लिया गया है। आन्दोलन के समय जयप्रकाश नारायण के कुछ ऐसे मित्र थे जो चाहते थे कि जेपी और इंदिरा जी में मेल-मिलाप हो जाय। इसी प्रसंग में जेपी ने कहा है कि उनका किसी व्यक्ति से झगड़ा नहीं है। चाहे वह इंदिराजी हों या कोई और, उन्हें तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धान्तों से झगड़ा है। जो कार्य गलत होंगे, जो सिद्धान्त गलत होंगे, उन्हें उनसे झगड़ा है।

(ख) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ सुविख्यात निबन्धकार बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित 'बातचीत' शीर्षक ललित निबन्ध से ली गई है। इन पंक्तियों के माध्यम से निबन्धकार यह बताना चाहता है कि बोलने से मनुष्य का साक्षात्कार होता है, उसकी पहचान सामने आती है। मनुष्य के मन के अन्दर बहुत-सी परतें जमी होती हैं। इनमें कुछ अच्छी होती हैं और कुछ बुरी होती हैं। बातचीत के दौरान यह हमारी जिह्वा से प्रकट हो जाता है। अत: बोलने से ही मनुष्य के गुण-दोषों की पहचान होती है और उसका जरिया है बातचीत।

(ग) व्याख्या—प्रस्तुत काव्यांश ''प्यारे नन्हें बेटे को'' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता उदीयमान कवि विनोद कुमार शुक्ल हैं। इन पंक्तियों में कवि लोहे की खोज सपरिवार करना चाहता है।

कवि का कथन है कि लोहा की खोज वह एक साथ मिलकर धीरे-धीरे करेगा। घर के सभी सदस्यों के साथ वह यह कार्य करेगा।

इन पंक्तियों में लोहा खोजने हेतु उसकी उत्कंठा स्पष्ट झलकती है।

(घ) व्याख्या—आज सभी दिशाएँ पुलकित हैं, सर्वत्र प्रसन्नता छाई हुई है। सारे विश्व में उल्लास का वातावरण है। किन्तु मेरा (कवयित्री) खोया हुआ खिलौना अब तक मुझे प्राप्त नहीं हुआ। अर्थात् कवयित्री के पुत्र का निधन हो गया है। इस प्रकार वह उससे (कवयित्री से) छिन गया है। यह उसकी व्यक्तिगत क्षति है। विश्व के अन्य लोग हर्षित हैं। सभी दिशाएँ भी उल्लासित (प्रमुदित) दीख रही हैं। किन्तु कवयित्री ने अपना बेटा खो दिया है। उसकी मृत्यु हो चुकी है। वह उद्विग्न है, शोक विह्वल है। अपनी असंयमित मनोदशा में वह बेटा के वापस आने की प्रतीक्षा करती है और नहीं लौटकर आने पर निराश हो जाती है।

3. सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
क०ख०ग० विद्यालय,
.... नगर।

विषय : खेल सामग्री उपलब्ध कराने के संबंध में।

महोदय

सविनय निवेदन है कि अगले ही मास अपने विद्यालय-बोर्ड की खेल-कूद प्रतियोगिता आयोजित होने जा रही है। इस बार अधिक वर्षा के कारण हमारे क्रीड़ा-स्थल ही हालत खराब हो गई है। किसी भी खेल की समुचित तैयारी नहीं हो पाई है। मैदान में कई स्थानों पर गड्ढे हो गए हैं। क्रिकेट की पिच क्षतिगस्त हो गई है। बैड-मिण्टन और दौड़ का रेखांकन मिट गया है।

आपसे आग्रह है कि खेल के मैदान की उचित व्यवस्था कराएँ। मैदान के गड्ढे भरवाकर उसे समतल कराने की कृपा करें। क्रिकेट के पिच पर तो काफी परिश्रम की आवश्यकता है।

इस वर्ष अभी तक खेल का नया सामान खरीदा नहीं गया है। इसलिए दस दिन से अभ्यास बन्द है। पिछले वर्ष भी अभ्यास की कमी के कारण हमारी टीमें परास्त हो गई थीं। आपसे आग्रह है कि शीघ्र ही खेल के सामान और मैदान की समुचित व्यवस्था कराएँ ताकि हम बेहतर खेल का प्रदर्शन कर सकें।

धन्यवाद सहित।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
मोहन
खेल सचिव
कक्षा बारहवीं-सी
अनुक्रमांक...........

दिनांक : 8 फरवरी, 2024

अथवा,

सेवा में,
प्रधान सम्पादक,
हिन्दुस्तान,
पटना।

विषय—बिजली संकट की परेशानियाँ।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से बिजली संकट और उससे उत्पन्न कठिनाइयों की ओर सरकार तथा अन्य अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करना चाहत हूँ। आशा है, आप इस विषय की गम्भीरता को समझते हुए अवश्य अपने पत्र में स्थान देंगे।

आजकल राँची बिजली-बोर्ड की ओर से नित्य बिजली की कटौती की जा रही है। प्राय: दिनभर बिजली गायब रहती है। रात को भी वह आँख-मिचौली खेलने लगती है। आजकल गर्मी के दिन हैं। बिजली के कारण सारा जन-जीवन संकटग्रस्त हो जाता है। नगर का सारा औद्योगिक क्षेत्र ठप्प पड़ा है। नित्य की मजदूरी पर आश्रित हजारों मजदूरों की उस दिन रोजी मारी जाती है। उन्हें भूखे रहने को विवश होना पड़ता है।

आज छापाखाना, फोटोग्राफी आदि कई आवश्यक व्यापार-सेवाएँ ऐसी हैं, जो पूर्णतया बिजली पर आधारित है। अस्पताल में तड़पते हुए रोगियों की दश चिन्तनीय है। रत को अन्धेरे के कारण अनेकानेक दुर्घटनाएँ तो होती ही हैं, छात्रों के भविष्य पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अत: बिजली-बोर्ड के अधिकारियों से मेरा आग्रह है कि वे और अधिक बिजली का उत्पादन करें ताकि जन-जीवन अस्त-व्यस्त न हो।

धन्यवाद सहित।

भवदीय
सोनू कुमार
12, अशोक नगर
पटना।

दिनांक : 29 फरवरी, 2024

4. (i) ट्रक पर बैठते समय शाहनी के पीछे गाँव के लोग शोकाकुल थे। सारा वातावरण गमगीन हो गया था। कोई पछता रहा था। उसी बीच शेरे आगे बढ़कर शाहनी का पाँव छूता है और कहता है—"शाहनी, कोई कुछ नहीं कर सका। राज भी पलट गया। शाहनी ने काँपते हुए हाथ शेरे के सिर पर रखा और रूक-रूक कर कहा—"तैनू भाग जगण चन्ना (ओ चाँद तेरे भाग्य जागे)।" शाहनी का यह आशीर्वाद सांकेतिक था। शाहनी की सम्पति शेरे को ही मिलने वाली थी। शेरे ने दंगाइयों के साथ बहुत कत्ल किए थे। शाहनी की मृत्यु भी उसे ही करनी थी, लेकिन वह कर न सका। तब भी शेरे के भाग जगने वाले थे। शहनी का आशीर्वाद भी उसे मिला।

(ii) बुद्ध निवृतिमार्गी थे। उन्होंने गृहस्थ जीवन को मुक्ति-मार्ग में बाधक मानकर संन्यास ग्रहण किया था। किन्तु पत्नी के आग्रह पर उन्हें अनिच्छा से नारियों को बौद्धधर्म में प्रवेश की अनुमति देनी पड़ी।

(iii) चातकी एक पक्षी है जो स्वाति की बूँद के लिए तरसती है। वह केवल स्वाति का जल ग्रहण करती है। इसलिए वह स्वाति के जल की प्रतीक्षा सालों भर करती रहती है और जब स्वाति का बूँद आकाश से गिरता है तभी वह जलग्रहण करती है। इसी तरह दु:खी व्यक्ति सुख की आशा में चातकी की भाँति उम्मीद बाँधे रहते हैं। कवि के अनुसार एक-न-एक दिन उसके दु:खों का अन्त होता है।

(iv) मलिक मुहम्मद जायसी

(v) लखनऊ, उत्तरप्रदेश

(vi) यह सुनते ही मानो लहना पर वज्रपात होता है और वह किसी को नाली में ढकेलता है, किसी छाबड़ीवाले की छाबड़ी गिरा देता है, किसी कुत्ते को पत्थर मारता है, किसी सब्जीवाले के ठेले में दूध उड़ेल देता है और किसी सामने आती हुई वैष्णवी से टक्कर मार देता है और गाली खाता है।

(vii) संवादों के प्रसार में आधारभूत सुविधाओं का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इन सुविधाओं में परिवहन का साधन अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। अंग्रेज किसानों पर बेहद अत्याचार किया करते थें। बागी विचारों के संप्रेषण को फैलने

से बचाने के लिए उन्होंने गंगा पर पुल बनाने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। बिना परिवहन के साधन के विचारों का संप्रेषण नहीं हो पाता है, वह स्थानीय रह जाता है, जिसे आसानी से दमन किया जा सकता है। गंगा पर पुल बन जाने से अंग्रेजों को डर था कि दक्षिण बिहार के बागी विचार वहाँ भी न पहुँच जाएँ और शेष भाग का सहयोग उन्हें न मिल जाए। यह उनकी सत्ता के लिए बहुत ही खतरनाक था।

(viii) मानक वर्मा की लड़ाई में भारत की ओर से अंग्रेजों के साथ लड़ने गया था और दूसरी ओर के पक्ष जापानी थे। सेना एक दूसरे का दुश्मन है क्योंकि वे अपने-अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। मानक और सिपाही अपने को एक-दूसरे का दुश्मन समझते हैं इसलिए वे एक-दूसरे को मारना चाहते हैं।

(ix) लहनासिंह का सूबेदारनी के साथ भावनात्मक प्रेम है। वह एक सच्चा प्रेमी है जो प्रेम का प्रतिदान नहीं चाहता। वह प्रेम में उत्सर्ग होना जानता है। प्रेम की इस कसौटी का निर्वाह करता हुआ वह सूबेदारनी के पति और पुत्र की रक्षा करता हुआ शहीद हो जाता है।

(x) अर्द्धनारीश्वर के द्वारा स्त्री और पुरुष के गुणों को एक कर यह बताया गया है कि नर-नारी पूर्ण रूप से समान हैं एवं उनमें से एक के गुण दूसरे के दोष नहीं हो सकते अर्थात् नरों में नारियों के गुण आएँ तो उसने उनकी मर्यादा हीन नहीं बल्कि उनकी पूर्णता में वृद्धि ही होती है। आज इसकी जरूरत इसलिए है कि पुरुष समाज वर्चस्ववादी है और उसने यह समझ रखा है कि पुरुष में स्त्रीयोचित गुण आ जाने पर स्त्रैण हो जाता है। उसी प्रकार स्त्री समझती है कि पुरुष के गुण सीखने से उसके नारीत्व में बट्टा लगता है। इस प्रकार पुरुष के गुणों के बीच एक प्रकार का विभाजन हो गया है तथा विभाजन की रेखा को लाँघने में नर और नारी दोनों को भय है। इसलिए अर्द्धनारीश्वर की जरूरत है। संसार में पुरुषों के समान ही स्त्रियाँ हैं। जिस प्रकार पुरुषों को सूर्य की धूप पर बराबर अधिकार है उसी तरह नारियों को भी यह अधिकार है। पुरुष में नारी को षड्यंत्रों के जरिये उसे अधीन कर रखा है। दिनकर इस पुरुष वर्ग में स्त्री वर्ग को समझाना चाहते हैं कि नारी-नर पूर्ण रूप से समान हैं। पुरुष यदि नारियों के कुछ गुण अपना ले तो अनावश्यक विनाश से बच सकता है और नारी पुरुष के गुण अपना ले तो भय से मुक्त हो सकती है। इसीलिए अर्द्धनारीश्वर की कल्पना की गई है।

5. (i) प्रस्तुत कहानी ''उसने कहा था'' ब्रिटिश सेना में कार्यरत एक फौजी की कहानी है। ब्रिटिश फौज की सिक्ख रेजीमेंट के एक जमादार लहना सिंह के अपूर्व शौर्य, एक सैनिक की महत्त्वाकांक्षा एवं मनोदशा की सफल अभिव्यक्ति है यह कहानी। अदम्य साहस का इस कहानी में पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने सजीव चित्रण किया है। बारह वर्ष की आयु में (किशोरावस्था) लहना सिंह अपने मामा के यहाँ आया था। उसकी भेंट एक आठ वर्ष की बालिका से एक दूकान पर होती है। वह भी अपने मामा के घर आई हुई थी। इस बीच उसकी मुलाकात उस लड़की से प्राय: बाजार में हो जाया करती थी। वह उससे पूछ बैठता था कि उसकी शादी पक्की हो गई। उत्तर में लड़की शरमाकर धत् कहकर चली जाती थी। एक दिन उसके पूछने पर उस लड़की ने कहा कि कल (एक दिन पहले) उसकी सगाई हो गई है। यह सुनकर वह काफी उद्विग्न हो उठा। कालान्तर में लहना सिंह ब्रिटिश फौज के सिक्ख रेजीमेन्ट में भर्ती हो गया। बीच में वह छुट्टी लेकर घर आया हुआ था। लड़ाई पर जाते समय वह सूबेदार हजारा सिंह के घर पर रुका। सूबेदार की पत्नी पर दृष्टि जाते ही वह स्तम्भित रह गया। सूबेदार की पत्नी ने उससे आग्रह किया कि उसके पति एवं एकमात्र पुत्र जो सिक्ख रेजिमेंट में कार्यरत हैं, उनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखेगा। युद्ध क्षेत्र में 'लहना सिंह' ने अद्वितीय शौर्य का परिचय दिया। शत्रुओं की जर्मन सेना के आक्रमण को निष्फल कर दिया एवं अपने साथियों के सहयोग से बड़ी संख्या में उन्हें मार गिराया, हताहत किया। किन्तु स्वयं भी गंभीर रूप से घायल हो गया। सूबेदार को भी गोली लगी थी। डॉक्टरों की राहत टीम के आने पर जमादार स्वयं न जाकर जमादार एवं अन्य लोगों को गाड़ी पर भिजवा दिया। वह आत्म-संतोष से गर्वित था। उसने जमादार की पत्नी द्वारा किए गए आग्रह एवं दिए गए वचन का पूरी तरह पालन किया। अन्तत: उसका प्राणांत हो गया।

(ii) 'रोज' कथा साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन के प्रणेता महान् कथाकार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में 'संबंधों' की वास्तविकता को एकान्त वैयक्तिक अनुभूतियों से अलग ले जाकर सामाजिक संदर्भ में देखा गया है। मध्यवर्ग की पारिवारिक एकरसता को जितनी मार्मिकता से कहानी व्यक्त कर सकी है वह उस युग की कहानियों में विरल है।

लेखक अपने दूर के रिश्ते की बहन मालती जिसे सखी कहना उचित है, से मिलने अठारह मील पैदल चलकर पहुँचता है। मालती और लेखक का जीवन इकट्ठे खेलने, पिटने स्वेच्छा एवं स्वच्छंदता तथा भ्रातृत्व के छोटेपन बँधनों से मुक्त बीता था। आज मालती विवाहिता है, एक बच्चे की माँ भी है। वार्तालाप के क्रम में आए उतार-चढ़ाव में लेखक अनुभव करता है कि मालती की आँखों में विचित्र-सा भाव है, मानो वह भीतर कहीं कुछ चेष्टा कर रही हो, किसी बीती बात को याद करने की, किसी बिखरे हुए वायुमंडल को पुन: जगाकर गतिमान करने की, किसी टूटे हुए व्यवहार तंतु को पुनर्जीवित करने की, और चेष्टा में सफल न हो चिर विस्मृत हो गया हो। मालती रोज कोल्हू के बैल की तरह व्यस्त रहती है। उसका जीवन ग्रैंग्रीन मर्ज के समान है जिसका ऑपरेशन उसके डॉक्टर पति द्वारा किया जाता है। पूरे दिन काम करना, बच्चे की देखभाल करना और पति का इंतजार करना इतने में ही मानों उसका जीवन सिमट गया है।

वातावरण, परिस्थिति और उसके प्रभाव में ढलते हुए एक गृहिणी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक उद्घाटन अत्यंत कलात्मक रीति से लेखक यहाँ प्रस्तुत करता है। डॉक्टर पति के काम पर चले जाने के बाद का सारा समय मालती को घर में एकाकी काटना होता है। उसका दुर्बल, बीमार और चिड़चिड़ा पुत्र हमेशा सोता रहता है या रोता रहता है। मालती उसकी देखभाल करती हुई सुबह से रात ग्यारह बजे तक घर के कार्यों में अपने को व्यस्त रखती है। उसका जीवन ऊब और उदासी के बीच यंत्रवत चल रहा है। किसी तरह के मनोविनोद, उल्लास उसके जीवन में नहीं रह गए हैं। जैसे वह अपने जीवन का भार ढोने में ही घुल रही हो।

इस प्रकार लेखक मध्यवर्गीय भारतीय समाज में घरेलू स्त्री के जीवन और मनोदशा पर सहानुभूतिपूर्ण मानवीय दृष्टि केन्द्रित करता है। कहानी के गर्भ में अनेक सामाजिक प्रश्न विचारोत्तेजक रूप में पैदा होते हैं।

(iii) जीवनी—सन् 16 अगस्त, 1904 को सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म निहालपुर, इलाहाबाद (उ० प्र०) में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती धीरज कुँवर और पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। सन् 1919 में इनका विवाह ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान से खंडवा, मध्य प्रदेश में हुआ। लेखिका के पति अंग्रेजी सरकार द्वारा जब्त 'कुली प्रथा और गुलामी का नशा' नामक नाटकों के लेखक एक प्रसिद्ध पत्रकार, अच्छे स्वतंत्रता सेनानी और कांग्रेस के सक्रिय नेता थे। लेखिका की आरम्भिक शिक्षा क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल, इलाहाबाद में हुई जहाँ इनके साथ प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा भी थीं। इसके पश्चात् वाराणसी में थियोसोफिकल स्कूल के नौवीं कक्षा के बाद अधूरी शिक्षा छोड़ कर असहयोग आंदोलन में कूद पड़ीं। छात्र जीवन से ही इन्हें काव्य रचना की अभिरुचि थी। आगे चलकर एक अच्छी कवियत्री एंव साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठा भी पाईं।

लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान अपने जीवनकाल में समाज सेवा, स्वाधीनता संघर्ष में सक्रिय भागीदारी, राजनीति करते हुए अनेक बार कारावास भी गयीं। अन्त में मध्यप्रदेश के एक विधानसभा में एम. एल. ए. बनकर अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन और जागरण में सक्रिय भूमिका निभाते हुए वसंत पंचमी के दिन इस संसार से चली गईं।

कविता का सारांश—सुभद्रा कुमारी चौहान मूलत: राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा की कवयित्री हैं परन्तु सामाजिकता पर ध्यान गया है उनका। कवयित्री इस कविता में एक माँ की पुत्र की असमय मृत्यु होने पर उसकी स्थिति क्या हो सकती है उसी का चित्रण किया है। इस कविता में कवयित्री कहती है कि आज पूरा विश्व, संसार हँस रहा है, सभी ओर खुशी की लहर है परन्तु इस विश्व में सिर्फ एक मैं दु:खी हूँ जो मेरा 'खिलौना' खो गया है। 'खिलौना' यहाँ पुत्र

के प्रतीक के रूप में आया है। एक बच्चे के लिए सबसे प्यारी वस्तु उसका खिलौना होता है। यदि उसका खिलौना खो जाता है तो वह दुखी हो जाता है परन्तु जैसे ही मिलता है खुशी का ठिकाना न रहता है। उसी तरह एक माँ के लिए पुत्र खिलौने की भाँति ही होता है। माँ जिधर से आती है बच्चे को पुचकारती हुई आती है। बच्चा उसकी जिन्दगी का अहम हिस्सा हो जाता है। वह एक पल भी उसके बिना रह नहीं पाती। माँ अपने पुत्र को कहीं जाने नहीं देती इसलिए कि उसे कहीं सर्दी न लग जाए। अतः आँचल की ओट में अपने गोद से नहीं उतारती। पुत्र जैसे ही 'माँ' पुकारा कि माँ सब काम छोड़ते हुए दौड़ी चली आयी। ये पंक्तियाँ माँ का पुत्र के प्रति प्रगाढ़ प्रेम को दर्शाती हैं। यही नहीं बच्चा जब नहीं सोता है तब उसे थपकी दे-देकर लोरी सुनाकर सुलाती है। अपने पुत्र के मुख पर मलिनता देखकर रात भर जाग कर बिताती है।

माँ अपने पुत्र की खुशी या उसे पाने के लिए क्या-क्या नहीं करती। पत्थर जैसे अमूर्त को मूर्त मानकर उसकी पूजा करती है। कहीं नारियल, बताशे, कहीं दूध चढ़ाकर शीश नवाती है। फिर भी इतना करने के बावजूद उसका पुत्र (खिलौना) छिन ही जाता है। इसलिए वह असहाय हो जाती है। उसके प्राण व्याकुल हो जाते हैं।

उसकी शांति छिन जाती है। वह सोचती है कि मैंने अनमोल धन खो दिया है और फिर इसे मैं नहीं पा सकती। इस कारण माँ का जीवन-सुना सा होता है। पुत्र की याद में रोते रहना नियति बन गयी है। उसे जीवन नीरस लगने लगता है। उसे लगता है काश ! एक बार भी यदि तुम नहीं जाते, परन्तु जो विछुड़ गया वह पुनः मिलता कहाँ। अतः कवयित्री कहती है कि बेटा खोकर मन को समझाना बड़ा कठिन है। भाई-बहन, पिता सब भूल सकते हैं तुम्हें, परन्तु रात दिन की साथिन माँ तुम्हें कैसे भूल सकती है।

(iv) जीवनी—कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म श्योपुर, मध्य प्रदेश में सन् 1917 में हुआ था। इनके पिता माधव राव ग्वालियर रियासत के पुलिस विभाग में कार्यरत थे। पिता के शुभ व्यक्तित्व के प्रभाव से लेखक में ईमानदारी, न्यायप्रियता एवं दृढ़ इच्छाशक्ति का विकास हुआ है। इन्होंने अपने जीवन में मुख्यतः अध्यापन कार्य ही किये हैं।

मुक्तिबोध की रचनाओं में 'चाँद का मुँह टेढ़ा' है, 'भूरी-भूरी खाक धूल', 'कविता संग्रह' मुख्य हैं। 'विपात्र' नामक उपन्यास एवं 'एक साहित्यिक की डायरी' उनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ मानी गयी हैं। कामायानी एक पुनर्विचार', 'नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा 'अन्य निबंध', 'नए साहित्य का सौंदर्य शास्त्र' आदि उनकी रचनाएँ महत्व की हैं।

कविता का सारांश—मुक्तिबोध की कविता अकेले मुक्तिबोध की कविता नहीं है। उसमें हमारे भारतीय जन-समूह को कहना चाहिए कि समूह मन की कविता शामिल और सक्रिय है। मुक्तिबोध की कविता और कथा कृतित्व एक चीख है, उस अयथार्थ बौद्धिकता और अयथार्थ कलात्मकता के विरुद्ध जिसके चलते बहुत जल्दी नयी कविता में गतिरोध आ गये थे। मुक्तिबोध की कविता का प्राणतत्व है उनका निरन्तर आत्मसंघर्ष। इसी से वह हमें बाँधती नहीं, मुक्ति करती है। उनसे असहमत होना भी उतना ही स्फूर्तिदायक होता है, जितना उनसे सहमत होना। उनका यह आत्म संघर्ष उनकी कविता 'जन-जन का चेहरा एक' में भी दिखलाई पड़ता है। कवि पीड़ित और संघर्षशील जनता का, जो अपने मानवोचित अधिकारों के लिए कर्मरत है, चित्र प्रस्तुत करता है। यह जनता दुनिया के तमाम देशों में संघर्षरत है और अपने कर्म और श्रम से न्याय, शांति, बंधुत्व दिशा में प्रयासरत है। कवि इस जनता में एक अन्तर्वर्ती एकता देखता है और इस एकता को कविता का कथ्य बनाकर संघर्षकारी संकल्प में प्रेरणा और उत्साह का संचार करता है। कवि कहते हैं कि चाहे जिस देश प्रांत पुर का ही जन-जन का चेहरा एक है चाहे वह एशिया, यूरोप, अमेरिका सभी जगह के मजदूर एक है। कवि पूँजीवादी समाज को शोषक और शोषित वर्ग के रूप में देखता है। एक को शोषक और एक शोषित के रूप में देखता है। सभी के लिए धूप एक है, कष्ट-दुःख संताप एक है और अभी मुट्ठियों का एक लक्ष्य है शोषक से मुक्ति। कवि विभिन्न प्रतीकों के सहारे जनता की अंतवर्ती एकता का वर्णन करता है। वह प्रकृति के हर अंग में मजदूरों के दुःख देखता है। वह मजदूरों शोषकों का दुःख नदियों की वेदना में देखता है। यही नहीं शोषक भी एक हैं बल्कि उनके चेहरे अलग-अलग हैं। कवि संसार के भौगोलिक वातावरण की चर्चा करते हुए कहता है कि चाहे एशिया के, यूरोप के, अमेरिका भिन्न वास स्थान के मानव एक हैं। सभी ओर खुशियाँ व्याप्त पर मनुष्यों का मनुष्यों के द्वारा शोषण एक गहरा संताप हैं। जब सब वस्तुएँ एक ही ढाँचे से बनी है तो यह विभेद क्यों ? कवि क्रांति के निर्माण में किसी एक को आगे आने की कामना करता है और समाजवादी की कल्पना करता है। व्यवस्था को बदलने की कोशिश करता है।

(v) भगत सिंह विद्यार्थियों को राष्ट्र के विकास का महत्वपूर्ण कारण मानते हैं। उनका विचार रहा है कि छात्रों को अपने दायित्व का निर्वाह पूर्ण निष्ठा से करना चाहिए। सच्ची लगन, निष्ठा, सच्चरित्रता एवं नैतिक गुणों को अपने जीवन का आदर्श बनाना चाहिए तथा अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए। राष्ट्र को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराना भी एक प्रकार से उनकी शिक्षा का एक अंग है। भगत सिंह के शब्दों में, ''यह हम मानते हैं कि विद्यार्थियों का मुख्य कार्य पढ़ाई करना होता है, उन्हें अपना पूरा ध्यान उस ओर लगा देना चाहिए, लेकिन क्या देश की परिस्थितियों का ज्ञान और उनके सुधार के उपाय सोचने की योग्यता पैदा करना उस शिक्षा में शामिल नहीं है !'' अर्थात् उन्होंने इस प्रकार अपना स्पष्ट अभिमत प्रकट किया है कि विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई के साथ-साथ राजनीति में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। उनके अनुसार ऐसी शिक्षा जो क्लर्की करने के लिए हासिल की जाय, वह अनुपयोगी ही नहीं निकम्मी तथा अहितकर भी है। उनके अनुसार ''जिन नौजवानों को कल देश की बागडोर हाथ में लेनी है, उन्हें आज ही अक्ल के अंधे बनाने की कोशिश की जा रही है, इससे जो परिणाम निकलेगा वह हमें खुद ही समझ लेना चाहिए।''

इस प्रकार भगत सिंह का विद्यार्थियों के प्रति स्पष्ट अभिमत है कि उन्हें विद्याध्ययन के साथ ही देश की स्वतंत्रता एवं सम्पन्नता की दिशा में ठोस कार्य करने चाहिए। इस कार्य हेतु उन्हें आत्म-बलिदान के लिए भी तत्पर रहना चाहिए।

(vi) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काव्य आदर्श प्रबंधकाव्य थे क्योंकि प्रबन्ध काव्य में मानव जीवन का एक पूर्ण दृश्य होता है। प्रबन्धकाव्य जीवन के सम्पूर्ण पक्ष को प्रकाशित करता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को भी उन्हें इसलिए परिसीमित लगा क्योंकि वह गीतिकाव्य है। आधुनिक कविता से उन्हें शिकायत भी थी, इसका कारण था—"कला कला" की पुकार, जिसके फलस्वरूप यूरोप में प्रगीत-मुक्तकों (लिरिक्स) का भी चलन अधिक देखकर यह कहा जाने लगा कि अब यहाँ भी उसी का जमाना आ गया है। इस तर्क के पक्ष में वह कहा जाने लगा कि अब ऐसी लम्बी कविताएँ पढ़ने की किसी को फुरसत कहाँ है जिनमें कुछ इतिवृत्त भी मिला रहाता हो। ऐसी धारणा बन गई अब तो विशुद्ध काव्य की सामग्री जुटाकर समाने रख देनी चाहिए जो छोटे-छोटे प्रगीत-मुक्तकों में ही संभव है। इस प्रकार काव्य में जीवन को अनेक परिस्थितियों की ओर हो जाने वाले प्रसंगों या आख्यानों की उद्भावना बन्द सी हो गई। यही कारण था कि ज्यों ही प्रसाद की 'कामायनी', 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण', 'पसोला की प्रतिध्वनि', 'प्रलय की छाया' तथा निराला की 'राम की शक्तिपूजा' तथा 'तुलसीदास' जैसे आख्यानक काव्य सामने आए तो आचार्य शुक्ल ने संतोष व्यक्त किया।

6. (i) शीर्षक : अंग्रेजी शिक्षा का कुप्रभाव

संक्षेपण—अंग्रेजी पढ़ना खराब नहीं है किन्तु अँग्रेज बनकर अपनी सभ्यता-संस्कृति को भूल जाना चिंता का विषय है। अंग्रेजी की शिक्षा पाकर नयी पीढ़ी दिशाहीन होकर अव्यावहारिक बन गयी है। हमें विवेक के साथ चिंतन करते हुए निरर्थक बातों से बचना चाहिए।

[कुल शब्द—95, संक्षेपित शब्द—41]

(ii) शीर्षक : दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली

संक्षेपण—आज की शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित अधिक बनाती है जबकि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को एक आदर्श नागरिक बनना होता है।

[कुल शब्द—63, संक्षेपित शब्द—25]

❑❑❑